Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 2 paper 3

Topic:·पल्लवों के राजनीतिक इतिहास का एक संक्षिप्त परिचय दें। दें।

(Give a brief introduction to the political history of the Pallavas.)

पल्लवों के आरंभिक इतिहास की जानकारी प्राकृत एवं संस्कृत अभिलेखों से ज्ञात होती है। प्राकृत अभिलेखों में अनेक राजाओं के नामों का उल्लेख मिलता है। आरंभिक शासको में सबसे प्रभावशाली राजा शिवस्कंदवर्मन् (चौथी शताब्दी के आरंभ में) था। वह भारद्वाजगोत्रीय होने का दावा करता था। उसने अनेक वैदिक यज्ञ करवाए। उसकी राजधानी काँचीपुरम् थी। उसका राज्य कृष्णा नदी से वेलारी जिले तक फैला हुआ था। अन्य शासकों के नाम भी प्राकृत अभिलेखों में मिलते हैं। संस्कृत अभिलेखों में 16 वैसे राजाओं का जिक्र मिलता है, जिन्होंने 350 से 575 ई० के मध्य राज्य किया था। प्राकृत और संस्कृत अभिलेखों के अनुसार विष्णुगोप नामक पल्लव-राजा हुआ, जिसे समुद्रगुप्त ने परास्त किया था और जिसका नाम प्रयाग प्रशस्ति में भी मिलता है।

सिंहविष्णु:-पल्लवों का पहला प्रमुख राजा सिंहविष्णु (575 से 600 ई) था। उसने अवनिसिंह की उपाधि धारण की। वह एक वीर और पराक्रमी राजा था। उसने चोल, मलय , कालभ्र, मालव, पांड्य और सिंहल के राजा तथा केरल को युद्ध में पराजित कर अपनी शक्ति का विस्तार किया। उसने अपने राज्य की सीमा कावेरी नदी तक विस्तृत कर ली। उसकी सता तमिल-प्रदेश में पूरी तरह स्थापित हो गई। उसने कला एवं साहित्य के विकास को भी प्रश्रय दिया। किरातार्जुनीय का रचयिता प्रसिद्ध कवि भारवि उसी के समय में हुआ था।

महेंद्रवर्मन प्रथम:-इस वंश का दूसरा महान राजा महेंद्रवर्मन प्रथम (600 से 630 ई था। वह सर्वगुणसंपन्न व्यक्ति था। युद्ध एवं शांति के कार्यों में वह समान रूप से प्रवीण था।उसके अनेक विरुद थे, जैसे मत्तविलास, विचित्रवित और गुणभर। महेंद्रवर्मन के समय में ही पल्लवों और चालुक्यों में राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता एवं संघर्ष का आरंभ हुआ, जो अनेक वर्षों तक चलता रहा। यह संघर्ष दक्षिणापथ में आधिपत्य स्थापित करने के लिए हुआ। पल्लवों श्री बढ़ती शक्ति से आशंकित होकर चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने महेंद्रवर्मन पर आक्रमण उसके राज्य के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया।

महेंद्रवर्मन ने भी संभवतः चालुक्यों पराजित किया एवं पुल्लूर पर विजय प्राप्त की। महेंद्रवर्मन ने कला और साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। उसने मत्तविलासप्रहसन की भी रचना की। आरंभ में उसकी अभिरुचि जैनधर्म मैं थी, परंतु कालांतर में वह शैवमतावलंबी हो गया। उसने वैष्णवधर्म को भी प्रश्रय दिया।

नरसिंहवर्मन 'महामल्ल:' - नरसिंहवर्मन प्रथम 'महामल्ल' (630 से 668 ई०) ने वातापीकोंड की उपाधि धारण की। उसने विरासत में पाए हुए पल्लवराज्य को स्थायित्व प्रदान किया। उसने चोल, पांड्य, चेर और कदम्ब शासकों को पराजित किया। सिंहल के राजा मानवर्मा को गद्दी प्राप्त करने में नरसिंहवर्मन ने सैनिक सहायता प्रदान की। उसका संघर्ष चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के साथ भी हुआ। आरंभ में पल्लव शासक पराजित हुआ, परंतु उसने हार नहीं मानी। काँची के निकट पुलकेशिन को पराजित कर उसने चालुक्यों की राजधानी वातापी पर आक्रमण किया। इसी युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मारा गया तथा पल्लवों की राजनीतिक श्रेष्ठता स्थापित हो गई। नरसिंहवर्मन के समय (641 ई०) में ही प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग काँची गया था। उसने काँची के राजा और वहाँ की प्रजा की प्रशंसा की है।

परमेश्वरवर्मन प्रथम - नरसिंहवर्मन के पश्चात कुछ वर्षों के लिए महेंद्रवर्मन द्वितीय (668 से 670 ई०) शासक बना। उसके राज्यकाल की कोई विशेष घटना उल्लेख्य नहीं है। उसका उत्तराधिकारी परमेश्वरवर्मन प्रथम (670 से 695 ई०) हुआ। इसके राज्यकाल की सबसे प्रमुख घटना है पल्लव-चालुक्य-संघर्ष। दोनों वंशों के अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि आरंभ में चालुक्य राजा विक्रमादित्य ने परमेश्वरवर्मन को हराया, परंतु अंतिम चरण में पल्लव राजा ने पेरुवालन्त्रलूर के युद्ध में विक्रमादित्य को बुरी तरह पराजित कर भागने पर मजबूर कर दिया।

परमेश्वरवर्मन के उत्तराधिकारी तथा पल्लवों का पतन:-परमेश्वरवर्मन प्रथम के पश्चात पल्लवों की राजनीतिक शक्ति धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगी। नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह'(695 से 720 ई०) का शासनकाल सुख, समृद्धि, शांति एवं कलात्मक प्रगति का युग था, उसने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। दंडिन उसी के दरबार में रहता था। इस समय पल्लव-चालुक्य संघर्ष कुछ समय के लिए रुक गए। उसने एक दूतमंडली भी चीन भेजी जिससे व्यापारिक संबंधों का विकास हुआ। राजसिंह के बाद चोल चालुक्य संघर्ष पुनः आरंभ हुआ। चालुक्य राजकुमार, विक्रमादित्य द्वितीय ने गंग शासकों की सहायता से काँची पर आक्रमण कर दिया। अतः परमेश्वरवर्मन द्वितीय (720 से 731 ई०) को चालुक्यों से समझौता करना पड़ा। गंग-शासकों ने इसे पराजित कर युद्ध में मार डाला। उसकी मृत्यु के पश्चात गद्दी के अनेक दावेदार उठ खड़े हुए। अब राजसत्ता पल्लवों की दूसरी शाखा (सिंहविष्णु के भाई भीम के वंशजों) के हाथों में चली गई। इस वंश का प्रथम राजा नंदिवर्मन द्वितीय (731 से 795 ई०) बना। उसे चालुक्य राजा विक्रमादित्य मादित्य द्वितीय तथा राष्ट्रकूट राजा दन्तिदुर्ग के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। पांड्यों से भी उसका युद्ध हुआ। यद्यपि नन्दिवर्मन ने बल्लभ, कलभ, केरल आदि राज्यों पर विजय पाई, तथापि पांड्यों से यह पराजित हुआ। नन्दिवर्मन ने अनेक पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया तथा नए मंदिर भी

बनवाए। उसके द्वारा बनवाए मंदिरों में सबसे प्रमुख वैकुंठपेरूमल का मंदिर है। दन्तिवर्मन (796 से 847 ई०) को भी राष्ट्रकूटों का आक्रमण झेलना पड़ा। गोविंद तृतीय राष्ट्रकूट ने पल्लवों की राजधानी काँची पर आक्रमण कर इसे लूटा। नन्दिवर्मन तृतीय (847 से 869 ई०) के समय तक पांड्य बहुत अधिक प्रभावशाली बन चुके थे। उनसे अपनी सुरक्षा के लिए पल्लवराजा ने राष्ट्रकूटों, गंगों और चोलों की सहायता से पांड्यों पर आक्रमण किया, परंतु वह सफल नहीं हो सका। वह कला और साहित्य का संरक्षक था। उसने एक शक्तिशाली जलबेड़ा का गठन किया तथा श्याम में एक विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया। उसका उत्तराधिकारी नृपतुंग (870 से 878 ई०) हुआ। अपराजितवर्मन ने गंगों और चोलों की सहायता से नृपतुंग को गद्दी से हटाकर स्वयं सत्ता हथिया ली। पल्लवों का अंतिम राजा अपराजिता वर्मन था यद्यपि इस राजा ने पांडयों पर विजय प्राप्त की तथापि चोल राजा आदित्य प्रथम ने 897 ईस्वी में इसे पराजित कर पल्लवों के राज पर अधिकार कर लिया इसके साथ ही पल्लव राजवंश का शासन समाप्त हो गया।